रविवार 1 अगस्त, 2021

विषय **— प्रेम**

स्वर्ण पाठ: **रोमियो** 13 : 10

"प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 119 : 97, 114, 117, 127, 133, 165

97 अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।
114 तू मेरी आड़ और ढ़ाल है; मेरी आशा तेरे वचन पर है।
117 मुझे थाम रख, तब मैं बचा रहूंगा, और निरन्तर तेरी विधियों की ओर चित्त लगाए रहूंगा!
127 इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूं।
133 मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।
165 तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शान्ति होती है; और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यहोशू 22 : 5 (लेना)

5 ... इस बात की पूरी चौकसी करना कि जो जो आज्ञा और व्यवस्था यहोवा के दास मूसा ने तुम को दी है उसको मानकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम रखो, उसके सारे मार्गों पर चलो, उसकी आज्ञाएं मानों, उसकी भक्ति मे लौलीन रहो, और अपने सारे मन और सारे प्राण से उसकी सेवा करो।

2. रूत 1 : 1, 2 (*से 3rd* ,), 3-6, 8, 9 (फिर)-11 (*से 1st* ,), 12 (*से* .), 14 (*से* :), 16, 19 (*से.*)

---

1 न दिनों में न्यायी लोग न्याय करते थे उन दिनों में देश में अकाल पड़ा, तब यहूदा के बेतलेहेम का एक
पुरूष अपनी स्त्री और दोनों पुत्रों को संग ले कर मोआब के देश में परदेशी हो कर रहने के लिये चला।
2 उस पुरूष का नाम एलीमेलेक, और उसकी पत्नि का नाम नाओमी, और उसके दो बेटों के नाम महलोन
और किल्योन थे।
3 और नाओमी का पति एलीमेलेक मर गया, और नाओमी और उसके दोनों पुत्र रह गए।
4 और इन्होंने एक एक मोआबिन ब्याह ली; एक स्त्री का नाम ओर्पा और दूसरी का नाम रूत था। फिर वे
वहां कोई दस वर्ष रहे।
5 जब महलोन और किल्योन दोनों मर गए, तब नाआमी अपने दोनों पुत्रों और पति से रहित हो गई।
6 तब वह मोआब के देश में यह सुनकर, कि यहोवा ने अपनी प्रजा के लोगों की सुधि लेके उन्हें भोजनवस्तु
दी है, उस देश से अपनी दोनों बहुओं समेत लौट जाने को चली।
8 तब नाओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, तुम अपने अपने मैके लौट जाओ। और जैसे तुम ने उन से जो
मर गए हैं और मुझ से भी प्रीति की है, वैसे ही यहोवा तुम्हारे ऊपर कृपा करे।
9 तब उसने उन को चूमा, और वे चिल्ला चिल्लाकर रोने लगीं,
10 और उस से कहा, निश्चय हम तेरे संग तेरे लोगों के पास चलेंगी।
11 नाओमी ने कहा।
12 हे मेरी बेटियों, लौटकर चली जाओ, क्योंकि मैं पति करने को बूढ़ी हूं।
14 तब वे फिर से उठीं।
16 रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर
मैं भी जाऊंगी; जहां तू टिके वहां मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर
होगा;
19 सो वे दोनों चल निकलीं और बेतलेहेम को पहुंची।

3. रूत 2 : 1, 2 (*से 1st* .), 5, 6, 8-12

1 नाओमी के पति एलीमेलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी था, जिसका नाम बोअज था।
2 और मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा, मुझे किसी खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे,
उसके पीछे पीछे मैं सिला बीनती जाऊं।
5 तब बोअज ने अपने उस सेवक से जो लवने वालों के ऊपर ठहराया गया था पूछा, वह किस की कन्या है।
6 जो सेवक लवने वालों के ऊपर ठहराया गया था उसने उत्तर दिया, वह मोआबिन कन्या है, जो नाओमी के
संग मोआब देश से लौट आई है।
8 तब बोअज ने रूत से कहा, हे मेरी बेटी, क्या तू सुनती है? किसी दूसरे के खेत में बीनने को न जाना, मेरी
ही दासियों के संग यहीं रहना।
9 जिस खेत को वे लवतीं हों उसी पर तेरा ध्यान बन्धा रहे, और उन्हीं के पीछे पीछे चला करना। क्या मैं ने
जवानों को आज्ञा नहीं दी, कि तुझ से न बोलें? और जब जब तुझे प्यास लगे, तब तब तू बरतनों के पास
जा कर जवानों का भरा हुआ पानी पीना।
10 तब वह भूमि तक झुककर मुंह के बल गिरी, और उस से कहने लगी, क्या कारण है कि तू ने मुझ
परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है?

11 बोअज ने उत्तर दिया, जो कुछ तू ने पति मरने के पीछे अपनी सास से किया है, और तू किस रीति अपने
माता पिता और जन्मभूमि को छोड़कर ऐसे लोगों में आई है जिन को पहिले तू ने जानती थी, यह सब मुझे
विस्तार के साथ बताया गया है।
12 यहोवा तेरी करनी का फल दे, और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जिसके पंखों के तले तू शरण लेने आई है
तुझे पूरा बदला दे।

4. सपन्याह 3 : 17

17 तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा,
वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा॥

5. रोमियो 13 : 8, 10

8 आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी
ने व्यवस्था पूरी की है।
10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥

6. गलातियों 5 : 14

14 क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

7. 1 यूहन्ना 4 : 7, 8, 10 (*से 3rd* ,), 11, 12, 16, 18, 19, 21

7 हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से
जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है।
8 जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।
10 प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर ने प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया।
11 हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
12 परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और
उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।
16 और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है:
जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है।
18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय
करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।
19 हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया।
21 और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम
रखे॥

8. 1 यूहन्ना 5: 3 (*से*:)

3 और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 384 : 5-6

आइए हम अपने आप को प्रेम के नियम से आश्वस्त करें।

2. 494 : 10-15

ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है।

3. 454 : 17-24

ईश्वर और मनुष्य के लिए प्यार हीलिंग और शिक्षण दोनों में सच्चा प्रोत्साहन है। प्रेम प्रेरणा देता है, रोशनी करता है, नामित करता है और मार्ग प्रशस्त करता है। सही इरादों ने विचार, और ताकत और बोलने और कार्रवाई करने की स्वतंत्रता को चुटकी दी। सत्य की वेदी पर प्रेम पुरोहिती है। दिव्य प्रेम के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करें नश्वर मन के पानी पर आगे बढ़ने के लिए, और सही अवधारणा बनाएं। धीरज "को अपना पूरा काम करने दो॥"

4. 243 : 4-13, 25-29

दैवीय प्रेम, जिसने जहरीली सांप को हानिरहित बना दिया, जिसने उबलते हुए तेल से पुरुषों को ज्वलंत भट्ठी से, शेर के जबड़े से, हर उम्र में बीमार और पाप और विजय से मृत्यु तक पहुंचाया। इसने नायाब शक्ति और प्रेम के साथ यीशु के प्रदर्शनों को ताज पहनाया। लेकिन भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के प्राचीन प्रदर्शनों की पुष्टि करने और उन्हें दोहराने के लिए उसी "मन ... जो मसीह यीशु में भी था" हमेशा विज्ञान के पत्र के साथ होना चाहिए।

सत्य में त्रुटि की कोई चेतना नहीं है। प्रेम में घृणा का भाव नहीं होता। जीवन का मृत्यु से कोई संबंध नहीं है। सत्य, जीवन और प्रेम अपने से भिन्न हर चीज के विनाश का नियम हैं, क्योंकि वे ईश्वर के अलावा कुछ भी घोषित नहीं करते हैं।

5. 135 : 21-32

यह कहा गया है, और यह सच है, कि ईसाई धर्म विज्ञान होना चाहिए, और विज्ञान ईसाई धर्म होना चाहिए, अन्यथा एक या दूसरा झूठा और बेकार है; लेकिन न तो महत्वहीन या असत्य है, और वे प्रदर्शन में एक जैसे हैं।

यह एक दूसरे के समान होने का प्रमाण देता है। जैसा कि जीसस ने सिखाया था कि ईसाई धर्म पंथ नहीं था, न ही कोई समारोह, और न ही कर्मकांडी यहोवा की ओर से कोई विशेष भेंट; लेकिन यह दिव्य प्रेम का प्रदर्शन था जिसमें त्रुटि करना और बीमारों को ठीक करना, न केवल मसीह, या सत्य के नाम पर, लेकिन सत्य के प्रदर्शन में, जैसा कि दिव्य प्रकाश के चक्रों में होना चाहिए।

6. 304 : 9-15

यह क्रिश्चियन साइंस का सिद्धांत है: उस दिव्य प्रेम को उसकी अभिव्यक्ति, या वस्तु से वंचित नहीं किया जा सकता है; वह आनन्द दुःख में नहीं बदल सकता, क्योंकि दुःख आनन्द का स्वामी नहीं है; वह अच्छाई कभी बुराई पैदा नहीं कर सकती; वह पदार्थ कभी भी मन उत्पन्न नहीं कर सकता है और न ही जीवन का परिणाम मृत्यु है। पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है।

7. 288 : 3-8

सत्य और त्रुटि के बीच काल्पनिक युद्ध केवल आध्यात्मिक इंद्रियों के साक्ष्य और भौतिक इंद्रियों की गवाही के बीच मानसिक संघर्ष है, और आत्मा और मांस के बीच यह युद्ध सभी प्रश्नों को ईश्वरीय प्रेम में विश्वास और समझ के माध्यम से सुलझाएगा।

8. 560 : 10-17

स्वर्ग सद्भाव का प्रतिनिधित्व करता है, और दिव्य विज्ञान स्वर्गीय सद्भाव के सिद्धांत की व्याख्या करता है। महान चमत्कार, मानवीय दृष्टि से, दिव्य प्रेम है, और अस्तित्व की महान आवश्यकता यह है कि मनुष्य में स्वर्ग के राज्य का गठन करने वाले सच्चे विचार को प्राप्त करना है। जब तक हम अपने पड़ोसी से घृणा करते हैं या किसी ऐसे व्यक्ति का झूठा अनुमान लगाते हैं जिसे परमेश्वर ने अपने वचन को सुनाने के लिए नियुक्त किया है, तब तक यह लक्ष्य कभी प्राप्त नहीं होता है।

9. 367 : 3-10 (*से 2nd* ,)

निविदा शब्द और क्रिश्चियन को एक अवैध, दयनीय धैर्य के साथ अपने भय और उन्हें हटाने के लिए प्रोत्साहित करना, कुटिल सिद्धांतों की जद्दोजहद से बेहतर है, उधार दिए गए भाषणों, और तर्कों की डोलिंग, जो कि वैध क्रायश्चियन साइंस पर इतने सारे पैरोडी हैं दिव्य प्रेम के साथ।

सत्य, अर्थात् मसीह की खोज करने का यही अर्थ है।

10. 239 : 16-22

अपनी प्रगति का पता लगाने के लिए, हमें सीखना चाहिए कि हमारे संबंध कहां रखे गए हैं और जिन्हें हम स्वीकार करते हैं और भगवान के रूप में मानते हैं। यदि ईश्वरीय प्रेम हमारे निकट, प्रिय, और अधिक वास्तविक

होता जा रहा है, तो यह बात आत्मा को सौंप रही है। जिन वस्तुओं का हम पीछा करते हैं और जो आत्मा हम प्रकट करते हैं वह हमारे दृष्टिकोण को प्रकट करती है, और दिखाती है कि हम क्या जीत रहे हैं।

11. 55 : 15-26

अपने स्वयं के पंखों के नीचे बीमार और पापी लोगों को इकट्ठा करके, सत्य का अमर विचार सदियों से चल रहा है। मेरी थकी हुई आशा उस सुखद दिन को महसूस करने की कोशिश करती है, जब मनुष्य मसीह के विज्ञान को पहचान लेगा और अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करेगा, — जब वह ईश्वर की सर्वशक्तिमानता और उस परमात्मा की उपचार शक्ति का एहसास करेगा जो उसने किया है और मानव जाति के लिए कर रहा है। वादे पूरे होंगे। दिव्य चिकित्सा के प्रकट होने का समय हर समय है; और जो कोई भी दिव्य विज्ञान की वेदी पर अपने सांसारिक स्तर को रखता है, अब मसीह के प्याले को पीता है, और वह ईसाई उपचार की भावना और शक्ति से संपन्न है।

12. 412 : 13-15

क्राइस्टियन साइंस और दिव्य प्रेम की शक्ति सर्वशक्तिमान है। यह वास्तव में पकड़ को नष्ट करने और बीमारी, पाप और मृत्यु को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है।

13. 241 : 19-24

सभी भक्ति का तत्व ईश्वरीय प्रेम का प्रतिबिंब और प्रदर्शन है, बीमारी को ठीक करना और पाप को नष्ट करना है। हमारे मास्टर ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

एक उद्देश्य, विश्वास से परे एक बिंदु, सत्य के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, स्वास्थ्य और पवित्रता का रास्ता।

14. 340 : 9-14

दूसरे शब्दों में: आइए सुनते हैं पूरे मामले का निष्कर्ष: परमेश्वर से प्रेम करो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो: क्योंकि सारा मनुष्य अपने स्वरूप और समानता में यही है। ईश्वरीय प्रेम अनंत है। इसलिए जो कुछ भी वास्तव में मौजूद है वह ईश्वर में है और उनके प्रेम को प्रकट करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6